विज्ञान

(www.tiwariacademy.com)

(अध्याय – 14) (प्राकृतिक संपदा)

(कक्षा – 9)

पेज 222

प्रश्न 1:

मृदा (मिट्टी) का निर्माण किस प्रकार होता है?

उत्तर 1:

सूर्य, जल, वायु और जीव मृदा निर्माण प्रकिया में विभिन्न भूमिका निभाते हैं। सूर्य पत्थरों को दिन में गर्म कर देता है जिससे वे फैलते हैं तथा रात के समय ये ठंडे होकर सिकुड़ते हैं। ये फैलना और सिकुड़ना समान रूप से नहीं होता है जिसके कारण पत्थरों में दरार पड़ जाती है और बड़े पत्थर टूटकर छोटे हो जाते हैं। कई बार पत्थरों की दरारों में जल भर जाता है और ठंडा होने पर यह जल दरारों को और चौड़ा कर देता है। जब बहता हुआ जल इन छोटे – बड़े पत्थरों को अपने साथ बहा ले जाते हैं तो ये आपस में टकराकर छोटे – छोटे कणों में बदल जाते हैं जिससे मृदा का निर्माण होता है। बहता हुआ जल तथा तेज हवा इस मृदा को मैदानों में बिछा देता है।

प्रश्न 2:

मृदा-अपरदन क्या है?

उत्तर 2:

मृदा की उपरी उपजाऊ परत का वायु, जल आदि द्वारा बहा कर दूसरे स्थान पर ले जाना मृदा अपरदन कहलाता है। इसके मुख्य कारण वनों की कटाई, एक ही जमींन पर बार – बार खेती करना, पशुओं द्वारा अत्यधिक चराई आदि हैं।

प्रश्न 3:

अपरदन को रोकने और कम करने के कौन-कौन से तरिके हैं?

उत्तर 3:

अपरदन को रोकने और कम करने के लिए निम्नलिखित तरीके हैं:

- नदियों पर बाँध बनाना: नदियों पर बाँध बनाने चाहिए ताकि वर्षा के दिनों में जब नदियाँ पूरी तरह अपने उफान पर होती हैं तो बहुत सी उपजाऊ मिटटी भी पानी के साथ बह जाती है।
- पशुचारण पर रोक: अत्यधिक पशुचारण से खेतों में घास तथा वनस्पतियाँ कम हो जाती हैं तथा जानवरों के खुरों से मिट्टी बार – बार टूटती रहती है जिसके कारण वर्षा का जल खेतों से मिटटी को बहा ले जाता है। घास तथा वनस्पतियों की जड़ें मिट्टी को पकड कर रखती हैं ।
- वृक्षारोपण: पौधों की जड़ें मृदा को बाँधे रखती हैं। जिससे जल तथा हवा उसे बहा नहीं सकती है। इसलिए जहाँ मृदा अपरदन की समस्या अधिक हो वहाँ अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए।
- चक्रण में कृषि: एक ही फसल को बार – बार उगाने से मृदा के पोषक तत्व समाप्त हो जाते हैं। अतः हमें फसलों को बदल – बदल कर बोना चाहिए।